विशिष्टाद्वैत वेदान्त में प्रत्यक्ष प्रमाण

पूनम शुक्ला

श्रुतियों पर आधारित एवं प्रस्थानत्रयी की व्याख्या के रूप में पल्लवित हिन्दू दर्शन वेदान्त कहलाते हैं। तथाकथित वेदान्त दर्शनों में शंकर के अद्वैत के बाद रामानुज का विशिष्टाद्वैत विशेष प्रतिष्ठित रहा है। शंकर के अद्वैत में जगत् को मिथ्या कहा गया है और कर्म को विशेष महत्त्व नहीं दिया गया है। इसके विपरीत, रामानुज जगत् को वास्तविक, वर्णाश्रम को अनिवार्य और भक्ति को (जो उनके अनुसार, एक प्रकार का ज्ञान ही है) मोक्ष का आवश्यक साधन मानते हैं। तत्त्व–मीमांसा में वे भी एक प्रकार के अद्वैतवाद के समर्थक हैं, किन्तु उनका अद्वैत विशिष्टाद्वैत है। रामानुज के अनुसार ब्रह्म–तत्त्व निर्विशेष नहीं, सविशेष है, जीव और जगत् उसे विशेषित करते है और उसके शरीर जैसे है। संसार में कोई भी तत्त्व निर्विशेष नहीं है, निर्विशेष का ज्ञान भी सम्भव नही है। हमारे सारे वक्तव्य सविशेष–विषयक होते हैं। रामानुज का कथन है कि यदि ब्रह्म को निर्विशेष का निर्गुण माना जाय तो श्रुति के वाक्य उसके सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं दे सकेंगे।